

विवेक्तव्य (wie eben) adj. impers.: इति विवेक्तव्यम् so ist es richtig aufzufassen KUMĀRILA bei MÜLLER, SL. 98. SARVADARĢANAS. 140, 13.

विवेक्तृ n. nom. abstr. zu विवेक्तृ 1): पात्रपात्रं RĀGA-TAR. 3, 317.

विवेक्य (von 1. विच् mit वि) adj. 1) zu sondern, zu unterscheiden: अपृथग्धर्मिणो ऽपृथग्विवेक्याः MAITRĢUP. 6, 22. — 2) zu untersuchen, zu prüfen, kritisch zu behandeln Verz. d. Oxf. H. 200, a, 3 v. u.

विवेचक (wie eben) adj. 1) sondernd, unterscheidend: सुखदुःखं NĪLAK. 21. — 2) richtig unterscheidend, eine richtige Einsicht habend, verständig: मनस् Spr. 1103. Personen Schol. zu KAP. 1, 122 (Gegens. मूढ). KUSUM. 2, 10. WILSON, SĀMKEJAK. S. 47 (neben अ). Davon विवेचकता f. richtiges Urtheil, richtige Einsicht RĀGA-TAR. 3, 259. विवेचकत्वं n. dass. SARVADARĢANAS. 172, 18. SĀH. D. 11, 13.

विवेचन (wie eben) 1) adj. (f. ई) a) unterscheidend: प्रभाषुम् BHĀG. P. 6, 3, 7. — b) untersuchend, prüfend, erörternd, kritisch behandelnd: गुणं (परिच्छेदं) SĀH. D. 253, 16. न्यायमकरन्दविवेचनी Titel eines Werkes HALL 133. — 2) n. a) das Unterscheiden: दृष्टादृष्टं HARIV. 13722. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 10. SARVADARĢANAS. 33, 21. auch f. अ in कार्याकार्यं WILSON, SĀMKEJAK. S. 47. — b) Untersuchung, Prüfung, Erörterung, kritische Behandlung: यस्य प्रवृत्तु कुरुते राज्ञो धर्मविवेचनम् M. 8, 21. MBH. 12, 1860. शिरेगदं SUÇR. 1, 11, 4. Verz. d. Oxf. H. 89, a, 15. 208, a, No. 489. b, 26. 209, b, 1 v. u. 210, b, No. 497. 243, b, No. 616. fg. 257, b, 20. fg. SARVADARĢANAS. 104, 13. fg. — c) richtiges Urtheil PĀNĪKAR. 2, 3, 5. — Vgl. कालतन्त्रं.

विवेदयिषु (vom desid. des caus. von 1. विद्) adj. zu melden beabsichtigend: विवेदयिषवः पार्थ तपस्युषे समास्थितम् dass MBH. 3, 1543 nach der Lesart der ed. Bomb.

विवेन (2. वि + वेन) s. अविवेनम्.

विवोढर (von 1. वृह् mit वि) m. Gatte H. 317.

विद्याधिन् (von व्यध् mit वि) adj. mit Geschossen durchbohrend AV. 1, 19, 1.

विंन्नत (2. वि + व्रत) adj. widerstrebend, widerspänstig: श्रमी ये विन्नता स्थन् तावन्: सं नेमयामसि AV. 3, 8, 5. die Rosse Indra's RV. 1, 63, 2. 8, 12, 15. 10, 23, 1. 49, 2. 33, 3. 103, 2. 4.

1. विष्, विशति DuĀTUP. 28, 130 (प्रवेशने). विशते, अविशन्: विवेश, विविशे; ved. विवेष्मन्, अविवेशीम् und विविश्याम्; विविशिवन् und विविश्याम् P. 7, 2, 63. VOP. 26, 134. अवित्तत्, अविन्नत, अविदमहि; वेद्यति (vgl. KĀr. 3 aus SIDDH. K. zu P. 7, 2, 10), वेष्टा, वेष्टुम् P. 8, 2, 36, Schol. 1) sich niederlassen, hineintreten in, eingehen in, — bei, sich hineinbegeben in (loc. und acc.) ÇAT. BR. 8, 6, 2, 5. 19. 14, 8, 13, 3. सोमश्चन्वै: RV. 9, 103, 4. विविश्रीक्रीतीरे liessen sich nieder R. 1, 36, 9 (37, 10 GORR.). अतःपुरे eintreten in MBH. 7, 2774. मन्दिरे KATHĀS. 3, 73. वासवेष्मनि 14, 32. अवत्तीषु RĀGA-TAR. 4, 162. ग्राममध्ये VARĀH. BRH. S. 32, 25. नरकेषु BHĀG. P. 5, 26, 37. शलभो तीव्रदहने Spr. (II) 100, v. 1. तेनैव पथा हृदि स्मरः KATHĀS. 3, 59. भगवान्विशते हृदि BHĀG. P. 2, 8, 4. संस्तौ 2, 33. विशामस्तस्यातः KATHĀS. 34, 156. अतः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः RATNĀV. 27, 8. विविशे उत्तरं विभो: BHĀG. P. 1, 6, 30. मध्येवारि KATHĀS. 18, 302. mit acc.: अतःपुरम् M. 7, 216. भवनं विशति MBH. 3, 2117. गर्भवनम् KATHĀS. 18, 159. गृहम् 20, 122. VARĀH.

BRH. S. 53, 125 (Einzug halten). RĀGA-TAR. 3, 175. HARIV. 3948. निवेशनम् R. 1, 20, 14. वेष्मनि 2, 47, 19. KATHĀS. 28, 140. शय्यावेशम् RĀGA-TAR. 4, 433. आवसथम् R. 2, 36, 26. सुतावासम् KATHĀS. 18, 327. सभाम् MBH. 2, 2051. R. 2, 36, 32. RĀGA-TAR. 5, 33. अवित्तत्सदः BHĀT. 11, 45. रङ्गम् MBH. 3, 2193. आश्रमपदम्. आश्रमम् 2466. R. 1, 38, 9. 4, 13, 20. पुरम् RAGH. 12, 18. VARĀH. BRH. S. 46, 66. KATHĀS. 12, 23. 18, 118. RĀGA-TAR. 5, 216. पातालम् R. 1, 44, 8. वनम्, अरण्यम्, अरवीम् MBH. 3, 2536. R. 1, 1, 29. 2, 74, 29. R. GORR. 2, 42, 6. 3, 74, 7. RAGH. 9, 53. 12, 9. KATHĀS. 25, 6. जन्मपाद्यान्, बिलानि RĀGA-TAR. 4, 175 (अविन्नत्). सरःकच्छम् 1, 204. वनदुर्गाणि R. 4, 18, 15. Spr. 1446 (med., aber v. l. act.). अम्भानिधिम् 849 (II). सरः 2391. नदीम् MBH. 3, 10689 (विशत्त्वं). जलम् JĀGĀ. 2, 108. नृपाणिवम् HARIV. 3971. ज्वलनम् so v. a. den Scheiterhaufen besteigen R. 1, 1, 81. 6, 101, 32. KATHĀS. 49, 161. BHĀG. 11, 29. वक्त्राणि ebend. R. 5, 36, 17. भुजंगविजम्भितम् der Mond VARĀH. BRH. S. 104, 47. तमः BHĀG. P. 3, 31, 32. 4, 19, 34 (med.). 7, 1, 18. वराहयूथो विशतीव भूतलम् R. 1, 17. जन्मध्यम् MBH. 3, 2513. द्विषद्वलम् Spr. 2846. भुजान्तरम् RAGH. 19, 38. MEGH. 100. यत्रो ऽत्तर्हृदयं विश्य तमो हंसि BHĀG. P. 9, 11, 6. मन्त्रिणा विशता मनः RĀGA-TAR. 3, 497. अमो हि वा सुरसंघा विशति eingehen —, aufgehen in BHĀG. 11, 21. 18, 55 (med.). MBH. 13, 1018 (med.). PRAB. 80, 15. विशति ताराग्रहा रविम् so v. a. kommen in Conjunction mit VARĀH. BRH. S. 20, 1. सो ऽद्विरनाधारः — अयो ऽविशत् versank in BHĀG. P. 8, 7, 6. शरस्तस्य — अविशद्वलम् drang in RĀGA-TAR. 3, 217. स शब्दे शो च भूमिं च प्राणिनां अवपानि च । विवेश R. 2, 91, 27 (100, 24 GORR.). KATHĀS. 25, 136. सर्वत्र पति पुरुषस्य चलाः स्वभावाः खिन्नास्ततो हृदयमेव पुनर्विशति gehen wieder zurück in's Herz MĀKĀH. 78, 19. fg. Ohne Ergänzung hineintreten (in's Haus u. s. w.) HARIV. 3471. 4340 (auf dem Schauplatze auftreten, erscheinen). R. 1, 9, 57. KĀM. NĪTIS. 6, 11. निर्गच्छेयुर्विशेष्युश्च चराः 12, 27. Spr. 288 (II). 1168. KATHĀS. 43, 248 (विश, nicht आविश gemeint). वत्सेशनिकटम् 13, 2. RĀGA-TAR. 6, 46. निर्गत्य न विशेह्यो मरुतो दत्तिदत्तवत् । वचः kehrt nicht wieder zurück Spr. 4472. — 2) heingehen, zur Ruhe gehen: (सूर्यम्) विशतं जगदनु सर्वं विशति ÇĀMKEH. BR. 8, 7. यदेवातो अवित्तत् RV. 10, 136, 2. — 3) sich setzen (vgl. उप): आसनानि R. 2, 82, 2. HARIV. 9031. परमासने 9080. — 4) sich wohin begeben: सेनयोरुभयोर्विविश्रुस्ते ऽग्रतो BHĀG. P. 8, 10, 12. अग्रे 26. राजमार्गम् RAGH. 6, 10. सा परिक्रम्य वै मेरुं जम्बूमूलं पुनर्नदी । विशति MĀKĀ. P. 34, 30. zuströmen, von Heeresabtheilungen und Nebenflüssen RĀGA-TAR. 3, 140. Jmd (acc.) zuströmen, zufließen, zu Theil werden: द्रविणाराधयः । विविश्रुस्तं विशा नाथमुद्वन्तमिवापगाः RAGH. ed. Calc. 4, 70. उपदा विविश्रुः शश्वन्वात्सेकाः कोसलेश्चरम् Lesart bei STENZLER. सरित इव समुद्रं संपदस्तं विशति KĀM. NĪTIS. 2, 44. उभयोरप्यलक्ष्या वै भागस्तं विशते नरम् HARIV. 14258. न विवेश च निद्रेनम् R. 4, 26, 9. मृत्योर्विशतः समं प्रजाः so v. a. treffen BHĀG. P. 4, 11, 20. Jmd (loc.) zukommen: स एष साक्षात्पुरुषः पुराणो न यत्र कालो विशते न वेदः 8, 12, 44. — 5) in einen Zustand eintreten, gerathen in: कश्मलम् R. GORR. 1, 49, 29. आपदम् Spr. (II) 585. — 6) an Etwas gehen: दीप्ताम् R. 1, 11, 20. शिवदीप्तायाम् BHĀG. P. 4, 2, 29. sich zu schaffen machen mit: पशुभ्यः (zur Erklärung von वैश्य) MBH. 12, 6955. — 7) विष्टं eingegangen in: तमः BHĀG. P. 10, 40, 25. अत्र कीमानि सर्वाणि भूतानि विष्टानि so v. a. ent-